ISSN 2454 - 5163

26 दिसम्बर 2021, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 40, अंक 06, कुल पृष्ठ 36

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

श्री पंचबालयती दिगम्बर जैन मंदिर, आरोन – गुना (म.प्र.)

(पंचकल्याणक – 19 दिसम्बर से 24 दिसम्बर 2021)

वीतराग-विज्ञान (461)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन :(0141)2705581, 2707458

E-mail : ptstjaipur67@gmail.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7000
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	**10000**

सम्यग्दृष्टि की दृष्टि में मृत्यु

सम्यग्दृष्टि (आत्मज्ञानी) की दृष्टि में मृत्यु इतनी गंभीर समस्या नहीं है; क्योंकि उसे मृत्यु में अपना सर्वस्व नष्ट होता प्रतीत नहीं होता। वह यह बात अच्छी तरह जानता है कि मृत्यु केवल पुराना झोंपड़ा छोड़कर नये भवन में निवास करने के समान स्थानान्तरण मात्र है, पुराना मैला-कुचैला वस्त्र उतारकर नया वस्त्र धारण करने के समान है।

सम्यग्दृष्टि भगवान आत्मा को ज्ञानज्योति स्वरूप चैतन्य देव के रूप में देखता है। वह अपने स्वरूप को पर द्रव्यों से पृथक्, रागादि से रहित, शाश्वत ज्ञाता-दृष्टा ही जानता है, मानता है तथा मृत्यु को केवल देह से देहान्तर होने रूप क्रिया मानता है। इसकारण वह मृत्यु से नहीं डरता। जबकि मिथ्यादृष्टि अज्ञानी को अनादि से देह में अपनापन होने से उसे मृत्यु में अपना सर्वस्व लुटा-लुटा-सा लगता है, अतः उसका भयभीत होना भी स्वाभाविक ही है।

– अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : ४० (वीर नि. संवत् २५४७) ४६१/अंक : ६

कर्म गति टारी नाहिं टरे....

कर्म गति टारी नाहिं टरे, करो कोई लाखों उपाय।
जंत्र मंत्र तंत्र नहिं लागे, भूलो हि खेद करे।।टेक।।
सेठ सुदर्शन प्रतिमा धारी, सूली जाहिं धरे।
श्रीपाल से शुद्ध समदृष्टि, सागर माँहि परे।।१।।
रावण राय महा अभिमानी, मरत हि नरक परे।
छप्पन कोटि परिवार कृष्ण का, वन में जाय मरे।।२।।
रामचन्द्र तो शिव के गामी, वन-वन भ्रमत फिरे।
सीता नारि सतीन शिरोमणि, जलती अग्नि परे।।३।।
भरत बाहुबली दोनों भ्राता, कैसे युद्ध करे?
हनुमान की मात अंजना, वन में दुख सहे।।४।।
पाण्डव पुत्र अर्जुन की त्रिया, जाको चीर हरे।
कृष्ण-रुम्मणि का सुत प्रद्युमन, जन्मत देव हरे।।५।।
कित फंदा कित रहत पारधी, कितहुँ मृग चरे।
कहा जमी को घाटो पड गयो, फंद में पाव धरे।।६।।
कहाँ लग साख दीजिये, इनकी लिखत हि ग्रन्थ भरे।
भूधर प्रभु से अरज करत है, आवागमन हरे।।७।।

– कविवर पण्डित भूधरदासजी

सम्यग्दर्शन का सुनहरा अवसर...

अहा! उल्लासपूर्वक जिस उपाय का श्रवण करने से मोहबन्धन शिथिल पड जाता है और जिसका गहन अन्तर्मथन करने से क्षणमात्र में मोह का क्षय हो जाता है – ऐसा मोहक्षय का अमोघ उपाय सन्तों ने दर्शाया है।

जगत् में अत्यन्त विरल और महादुर्लभ सम्यक्त्व प्राप्ति का मार्ग इस काल में सन्तों के प्रताप से सुगम बना है। यह वास्तव में मुमुक्षु जीवों का कोई महान सद्भाग्य है। ऐसा अलभ्य अवसर प्राप्त करके, सन्तों की छाया में, अन्य सब बातें भूलकर, अपने को अपने आत्महित के प्रयत्न में कटिबद्ध होना चाहिए।

स्वभाव की स्वसन्मुखतापूर्वक स्वरूप में लीन होकर, मोह का क्षय करके जो सर्वज्ञ अरहन्त परमात्मा हुए, उनके द्वारा उपदिष्ट मोह के क्षय का उपाय क्या है? आचार्यदेव वह बताते हैं। उन्होंने प्रवचनसार गाथा ८० में यह बताया कि भगवान अरहन्तदेव का आत्मा, द्रव्य-गुण-पर्याय तीनों से शुद्ध है। उनके शुद्ध द्रव्य-गुण-पर्याय को पहिचानकर, अपनी आत्मा के साथ उसका मिलान करने से, ज्ञान और राग का भेदज्ञान होकर, स्वभाव और परभाव की भिन्नता होकर, ज्ञान का उपयोग अन्तर स्वभाव-सन्मुख होता है। वहाँ एकाग्र होने पर गुण-पर्याय के भेद का आश्रय भी छूट जाता है और गुणभेद का विकल्प भी छूटकर पर्याय, शुद्धात्मा में अन्तर्लीन होती है। पर्याय अन्तर्लीन होने से मोह का क्षय होता है।

– सम्यग्दर्शन, भाग – ३

(प्रवचनसार गाथा ८६ के प्रवचन से) पृष्ठ : ५०-५१

सम्पादकीय

(गतांक से आगे....)

भरत का अन्तर्द्वन्द्व : नाटक

दूसरा अंक

पहला दृश्य

(सम्राट भरत ने छह खण्ड जीत लिये और लौटकर अयोध्या आ गये। सभी के मन में अपार प्रसन्नता थी, पर अचानक दरवाजे पर चक्ररत्न रुक गया। सभी को चिन्ता होने लगी। भरत भी चिन्ता में पड़ गये।)

सम्राट भरत – हे महामात्य! पता करो, यह सब कैसे हुआ? चक्ररत्न रुकने का कारण क्या है?

महामात्य – हाँ, महाराज! मैं अभी पता करता हूँ।

(महामात्य जाकर पता करते हैं तो पता चलता है कि भरत के भाई लोग अभी नहीं आये हैं। चक्र चाहता है कि सम्राट भाईयों के साथ ही अयोध्या में प्रवेश करें।)

महामात्य – महाराज की जय हो, जय हो; महाराज! कोई विशेष बात नहीं है। चक्ररत्न यह चाहता है कि आप अपने भाइयों के साथ अयोध्या में प्रवेश करें। अयोध्यावासी आप सबका एक साथ स्वागत करें।

सम्राट भरत – सभी भाइयों को दूतों के साथ तत्काल निमंत्रण भेजो। युवराज बाहुबली को विशेष दूत के साथ आवश्यक भेंट लेकर सादर आमंत्रण भेजें। हमें सभी को आदर के साथ बुलाना है। सभी का यथायोग्य सत्कार करना है।

महामात्य – ''हाँ, महाराज! सभी भाइयों को दूतों के हाथ उचित भेंट लेकर सादर आमंत्रण भिजवाते हैं।''

सम्राट भरत – ''ठीक है, दूतों से कहो कि सभी से अत्यन्त विनम्रता का व्यवहार करें। कहीं कोई चूक न हो जाय – इस बात की सावधानी रखें।''

(सभी दूत जाते हैं। युवराज बाहुबलि के पास महामात्य दक्षिणांक स्वयं जाते हैं।)

सम्राट भरत – ''हे महामात्य! बाहुबलि के पास किसे भेजा? उनका विशेष ध्यान रखना है।''

महामात्य – ''बाहुबलि के पास मैं स्वयं जा रहा हूँ। आप चिन्ता न करें। उनके सन्मान का मैं पूर्ण ध्यान रखूँगा।''

सम्राट भरत – ''जावो, जल्दी जावो। भाइयों के बिना दरबार शोभित नहीं होगा।''

(दूत बाहुबलि के पास पहुँचता है। उन्हें विनयपूर्वक नमस्कार करता है। उनके करकमलों में भेंट समर्पित करके सम्राट भरत का सन्देश देता है, आमंत्रण देता है, पधारने का बार-बार अनुरोध करता है।)

दूत – युवराज बाहुबलि महाराज! सम्राट भरत महाराज आपको आमंत्रित करते हैं। वे भरतक्षेत्र के छह खण्ड जीतकर आ गये हैं और अयोध्या में आपके साथ प्रवेश करना चाहते हैं। अयोध्या की जनता आप सबका एक साथ स्वागत करना चाहती हैं।

जब आप दोनों भाई एक साथ चलेंगे तो अद्भुत शोभा होगी।

युवराज बाहुबलि – ''भाई साहब! भरत सानन्द तो है। सर्वप्रकार कुशलता तो है। वे पूरी तरह प्रसन्न तो हैं। उनकी मुझे बहुत याद आती है, उनका अपार स्नेह मैं कभी भूल नहीं पाता।

हम साथ-साथ खेलते थे, खाना-पीना भी साथ-साथ ही चलता था। शरीर भले ही अलग-अलग थे, पर हम दोनों एक ही थे।

जब खेल में कभी मैं हार जाता और रोने लगता था, तो वे जीतकर भी मुझे जिता देते थे। 'मैं हारूँ' यह उन्हें बरदाश्त ही नहीं होता था। कहा करते थे कि मेरा बाहुबलि सदा अजेय है। आज उन्होंने छह खण्ड जीते हैं। अतः मैं अति ही प्रसन्न हूँ, पुलकित हूँ, रोमांचित हूँ।

मुझे इस बात की बहुत खुशी हो रही है कि इस अवसर पर उन्होंने मुझे याद किया है; आज भाई भरतेश चक्रेश हुये हैं, उन्हें मैं सौ-सौ बार बधाई देता हूँ।

(नेपथ्य में निम्नांकित गीत मधुर स्वर में बजते रहते हैं।)

(रेखता)

अरे रे बाहुबली के पास दूत जब पहुँचा था सानन्द।
विनय के साथ किया है नमन और करकमलों में दी भेंट।।
किया बाहूबलि का जयकार भरत के दिये सभी सन्देश।
भावभीना आमन्त्रण दिया किया उनसे अनुरोध विशेष।।१।।

अरे वात्सल्य भाव से भरे बड़े भाई तो हैं सानन्द।
कुशलता तो है सभी प्रकार और हैं पूरी तरह प्रसन्न।।
याद आती है उनकी बहुत और उनका अपार स्नेह।
कभी भी भूल नहीं पाते अरे उनका वात्सल्य विशेष।।२।।

अरे हम साथ-साथ खेले और खाना-पीना भी साथ।
भले हम दो देहों में रहे किन्तु अन्तर में दोनों एक।।
भले ही वे अग्रज मैं अनुज नहीं हम दोनों में कुछ भेद।
आज भी हैं हम दोनों एक अधिक क्या कहें एक हैं एक।।३।।

अरे हम खेल खेलते थे खेल में कभी हार जाता।
किन्तु जब मैं रोने लगता भरतजी मुझे जिता देते।।
अरे वे जीत-जीत कर भी अरे रे मुझे जिता देते।
अरे 'मैं हारूँ' यह उनको कभी बरदाश्त नहीं होता ।।४।।

कहा करते थे सबसे यही अरे बाहूबली सदा अजेय।
मुझे तो अच्छा लगता यही सदा ही जीते वह स्वयमेव।।
आज जीते उनने छह खण्ड और मैं पुलकित हूँ सर्वांग।
अधिक मैं क्या बोलूँ हे दूत! अरे रोमांचित हूँ सर्वांग।।५।।
दूत! यह पाकर शुभ सन्देश हृदय मेरा उल्लसित अपार।
खुशी के अवसर पर सप्रेम उन्होंने मुझे किया है याद।।
हुआ मुझको आनन्द विशेष और खुशियाँ हैं अपरम्पार।
अरे भरतेश हुये चक्रेश बधाई देता सौ-सौ बार ।।६।।[१]

दूत – ''महाराज! हमें जल्दी चलना है।''

युवराज बाहुबलि – ''अभी तो वे अयोध्या के दरवाजे पर ही पहुँचे हैं, उन्हें राजमहल के पास पहुँचने तो दो और आराम करने दो, जिससे उनकी थकावट कुछ दूर हो जावे।

फिर मैं उन्हें प्रत्यक्ष बधाई देने के लिये शीघ्र ही आता हूँ।''

दूत – ''आपका कहना तो ठीक है, पर चक्ररत्न अचानक रुक गया है। वह यही चाहता है कि आप सभी भाई नगर में एक साथ प्रवेश करे, जिससे सभी का एक साथ स्वागत किया जा सके।''

(दूत की यह बात सुनकर बाहुबलि कुछ गंभीर हो गये।)

पटाक्षेप

१.अध्याय ६, छन्द १०,११,१२,१३,१४,१९

दूसरा दृश्य

(बाहुबलि का राज दरबार लगा है और भरत का दूत उसमें उपस्थित है। वह कह रहा है -)

दूत – ''हे बाहुबलि महाराज! आपके बिना शोभायात्रा सुशोभित नहीं होगी। भरतराज को भी अच्छा नहीं लगेगा।''

युवराज बाहुबलि – ''दूत! तुम बहुत समझदार हो, चतुराई से भरपूर हो। बात इसतरह रखते हो कि कहीं कोई चूक न हो जावे।

कहीं ऐसी बात तो नहीं है कि सम्राट भरत हमको भी अपने अधीन करना चाह रहे हों। यद्यपि तुम बहुत प्रवीण हो, पर.....।''

दूत – ''नहीं, महाराज! नहीं; आप उनके अत्यन्त प्रिय अनुज हैं, आप तो उनके युवराज हैं। उन्होंने किसी को अपने अधीन नहीं किया, सभी को स्वाधीन बनाया है, संबंधी बनाया है।

आपसे तो उनको बहुत लगाव है। यदि कोई समस्या आवेगी तो आप दोनों भाई मिलकर निबटा लेना।''

युवराज बाहुबलि – ''भरत के सम्बन्ध में तो मुझे कोई शंका नहीं है; पर चक्ररत्न का प्रश्न तो है ही। मैं तो यही चाहता हूँ कि कहीं कोई उत्पात न हो।''

दूत – ''आप कैसी बात करते हैं। जबतक आप दोनों भाई एक साथ हैं, तबतक कोई कुछ नहीं कर सकता। किसी में ऐसा साहस नहीं कि जो आपका सामना करें। आप तो हमारे साथ चलें.....।''

युवराज बाहुबलि – ''हे दूत! तुम भरत के पास जावो। और यहाँ

जो कुछ जैसा घटित हुआ है, वह सब भरतराज से सच-सच कह देना। पूज्य भाई साहब से हमारा विनयपूर्वक नमस्कार कह देना।

अगर मुझे वे युद्धभूमि में ही बुला रहे हैं तो मैं आ जाता हूँ, सेना सहित आ जाता हूँ।

मुझे तो विश्वास है कि कुछ होगा नहीं, परन्तु यदि लड़ना ही पड़ा तो हम लड़ भी लेंगे।''

(दूत तो बाहुबलि को नमस्कार करके अवधपुरी को चला गया। किन्तु युवराज बाहुबलि गंभीरता से विचार करने लगे।)

युवराज बाहुबलि - ''दूत ने लड़ने की बात तो कही ही नहीं थी, मेरे मन में लड़ने की बात कहाँ से आ गई। भरत ने तो खुशी में शामिल होने का आमंत्रण भेजा था। उन्होंने युद्धभूमि में नहीं, अवधपुरी के दरवाजे पर बुलाया था।

अरे! मैं तो उनका युवराज हूँ और वे मेरे राजा हैं। आज तक तो ऐसी कोई बात आई नहीं। अब भी क्यों आवेगी?

दूत ने जो कुछ कहा था, उसमें भी ऐसी कोई बात नहीं थी। दूत ने विनयपूर्वक शोभायात्रा में शामिल होने की ही बात कही थी।

मैं व्यर्थ ही उत्तेजित हो गया। इसमें उत्तेजित होने की तो कोई बात ही नहीं थी।

अब मैंने जो सेना सहित आने की बात कह दी है, तदनुसार जाना तो सेना के साथ ही होगा। यद्यपि हम जानते हैं कि लड़ाई का कोई प्रसंग नहीं आयेगा, पर जाना तो पूरी तैयारी के साथ ही होगा।''

(नेपथ्य में निम्नांकित गीत मधुर स्वर में बजते रहते हैं।)

(रेखता)

दूत ! तुम समझदार हो बहुत और चतुराई से भरपूर ।
बात को रखते हो इस भाँति कि उसमें रहे न कोई चूक ।।
कहीं ऐसी तो नहीं है बात कि हमको भी अपने आधीन ।
बनाना चाह रहे हों भरत, यद्यपि तुम हो बहुत प्रवीण ।। १ ।।

आप तो उनके प्रियतम अनुज और उनके ही हो युवराज ।
उन्होंने राजाओं को नहीं सभी के मन को जीता आज ।।
किसी को नहीं किया आधीन अरे स्वाधीन बनाया है ।
अरे जोड़े उनसे सम्बन्ध और सम्बन्धि बनाया है ।। २ ।।

भरत में कोई शंका नहीं परन्तु चक्ररत्न की बात ।
मैं तो यही चाहता दूत ! नहीं होवे कोई उत्पात ।।
आप करते हैं कैसी बात किसी में ऐसा साहस नहीं ।
आप दोनों होंगे इक साथ कोई कुछ भी कर सकता नहीं ।। ३ ।।

दूत ! तुम जाव भरत के पास भरत से सब कुछ कह देना ।
अरे जो कुछ भी जैसा हुआ भरत से सही-सही कहना ।।
पूज्यतम बड़े भाई श्री भरतराज को नमस्कार कहना ।
और तुम विनयपूर्वक मर्यादा से सभी बात करना ।। ४ ।।

दूत ने ऐसा कुछ ना कहा कि जिसमें हो लड़ने की बात ।
भरत ने आमन्त्रण भेजा खुशी में शामिल होने का ।।
उन्होंने युद्धभूमि में नहीं, बुलाया अवधपुरी के द्वार ।
अगर आती भी कोई बात, बात करके सुलझा लेते ।। ५ ।।[१]

पटाक्षेप

१. अध्याय ६, छन्द २४,२५,२८,३०,३३

तीसरा दृश्य

(चतुर दूत बाहूबलि के पास से लौट के आ गया। उसने सम्राट भरतराज को एकान्त में सभी समाचार सुनाये।)

सम्राट भरत – ''हे दूत! बाहुबलि का व्यवहार कैसा था? सभी समाचार विगतवार सुनाओ।''

दूत महामात्य दक्षिणांक – ''बहुत अच्छा, उनका व्यवहार बहुत ही अच्छा था। उन्होंने अत्यन्त वात्सल्य भाव से हमें अपने पास बुलाया और बारंबार पूँछने लगे कि भरत महाराज कुशल से तो हैं।

फिर युवराज बाहुबलि कहने लगे कि सम्राट भरतराज चक्रवर्ती हो गये – यह जानकर मुझे अपार खुशी है और मैं उन्हें सौ-सौ बार बधाई देता हूँ।

उन्होंने मुझे इस खुशी के अवसर पर याद किया है – यह जानकर मुझे विशेष आनन्द हो रहा है।

आपके साथ उनके जो खेलकूद होते थे। उन्हें याद कर सुना रहे थे। उन्हें आपसे कोई शिकायत नहीं थी। वे आपसे मिलने को आतुर थे। बस, आपके राजमहल पहुँचने का इन्तजार था।

किन्तु जब मैंने यह कहा कि चक्ररत्न रुक गया है और चाहता है कि सभी भाई एक साथ अयोध्या में प्रवेश करें, अयोध्या में सबका एकसाथ स्वागत हो। तो उनको एक झटका सा लगा, मन कुछ शंकित हुआ।''

सम्राट भरत – ''फिर क्या हुआ?''

दूत महामात्य – ''फिर उन्होंने मुझसे कहा कि दूत तुम भरत के पास जावो। उनसे कहो कि यदि वे मुझे युद्धभूमि में ही बुलाना चाहते हैं तो मैं आ जाता हूँ और सेना भी साथ रहेगी।''

(यह सुनकर भरत भी कुछ गंभीर हो गये और सोचने लगे –)

सम्राट भरत – ''दूत ने जो कुछ भी कहा उसमें प्रतिकूल तो कुछ भी दिखाई नहीं देता; उनके भाव और व्यवहार एकदम अनुकूल ही दिखाई देता है।

किन्तु वे सेना के साथ क्यों आ रहे हैं? – यह बात समझ में नहीं आई। और यदि लड़ाई करनी होगी तो वह भी कर लेंगे – यह बात चित्त को अच्छी नहीं लगी।

कोई बात नहीं; वह स्वाभिमान का पिण्ड है, उसने हारना तो कभी सीखा ही नहीं है। वह हमेशा जीतता ही रहा है और हम भी तो उसे सदा जिताते ही रहे हैं। मैं तो उसे हारते देख ही नहीं सकता, पर वह भी मुझे हारते कैसे देखेगा? अरे, भाई! बाहुबलि से लड़ने की बात तो मैं कभी सोच भी नहीं सकता।

'भाई से भाई का लड़ना – कोई अनोखी बात नहीं है; भरत और बाहुबलि भी लड़े थे' – लड़ने वाले यह कहें, ऐसा परिहास करें – यह मुझे स्वीकार नहीं है। मैं भाई से भाई के लड़ने का इतिहास नहीं बनने दूँगा।''

(नेपथ्य में निम्नांकित गीत मधुर स्वर में बजते रहते हैं।)

(रेखता)

दूत से बोले भरत नरेश सुनाओ कैसा था व्यवहार ।
और कब कैसे क्या-क्या हुआ बताओ विगतवार सब बात ।।
अहो वात्सल्यभाव से हमें बुलाया उनने अपने पास ।
पूछने लगे भरत महाराज कुशल से तो हैं बारम्बार ।। १ ।।

खुशी से भुजबलि कहने लगे हमें खुशियाँ हैं अपरम्पार ।
अरे रे भरत हुये चक्रेश बधाई देते सौ-सौ बार ।।
और इस अवसर पर सस्नेह मुझे भी याद किया भरतेश ।
जानकर उनके मन के भाव हुआ मुझको आनन्द विशेष ।। २ ।।

एकदम उनको झटका लगा और वे मन में शंकित हुये ।
और फिर उनने मुझसे कहा दूत तुम जाव भरत के पास ।।
अगर वे युद्धभूमि में मुझे बुलाते हैं तो आता हूँ ।
सभी सेना भी रहेगी साथ और मैं भी आ जाता हूँ ।। ३ ।।

अरे वह स्वाभिमान का पिण्ड हारना उसने सीखा नहीं ।
और वह सदा जीतता रहा अरे हम रहे जिताते उसे ।।
और मैं देख नहीं सकता अरे रे उसे हारते हुये ।
और वह कैसे देखेगा अरे रे मुझे हारते हुये ।। ४ ।।

'भाई का भाई से लड़ना नहीं है कोई अनोखी बात ।
भरत अर बाहुबलि भी लड़े' – अरे लड़ने वाले यह कहें ।।
भाइ! मैं नहीं चाहता अरे जगत में हो ऐसा परिहास ।
भाइयों के लड़ने का भाइ ! नहीं बनने दूँगा इतिहास ।। ५ ।।[१]

पटाक्षेप

१. अध्याय ७, छन्द २,३,६,८,९

(क्रमशः)

छहढाला प्रवचन

जैनशासन की शोभा : समताधारी सन्त

अरि मित्र महल मसान कंचन, काँच निन्दन थुति करन।
अर्घावतारन असि प्रहारन, में सदा समता धरन।।६।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की छठवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

जैन मुनि निर्ग्रन्थ दिगम्बर होते हैं। उनके अन्तर में मोह की गाँठ नहीं होती और शरीर पर वस्त्रादि नहीं होते। निर्विकार मुनिराज को वस्त्र और स्नान कैसा? जिसने सम्यक्त्व और चारित्र जल से मोह मल को धोकर आत्मा को पवित्र कर लिया है, उसे अब शरीर के स्नान की क्या आवश्यकता? ऐसे मुनिराज महाधर्मधारी और महापुण्यवन्त होते हैं।

यदि असाता के उदय से किसी मुनिराज के शरीर में कोई रोग हो जाये तो उससे मुनिपने में कोई दोष नहीं लगता। केवली की भाँति मुनियों के शरीर में भी रोगादि नहीं होते – ऐसा नहीं है। मुनियों को रोगादि होने पर भी उन्हें शरीर में मूर्च्छा नहीं है; इसलिये वे रोग से घबराते नहीं हैं, रोग से उनका रत्नत्रय बिगड नहीं जाता।

अरे! उन्हें स्वयं रोग मिटानेवाली औषधि ऋद्धि सनतकुमार मुनिराज के समान प्रकटी होने पर भी उन्हें उसका लक्ष्य भी नहीं होता। वे तो चैतन्य के अनुभव की धुन में अन्य सभी से निरपेक्ष रहते हैं। बाहर में कोई शत्रु हो या मित्र हो, महल हो या श्मशान हो, कँचन हो या काँच हो,

प्रशंसा होती हो या निन्दा होती हो, कोई अर्घ्य चढाकर पूजा करता हो या तलवार से प्रहार करता हो - इन सभी स्थितियों में वे सदा समता धारण करते हैं और परिषहों में भी निर्भय होकर ध्यान में लीन रहते हैं।

वाह रे वाह! मोक्ष को साधनेवाले शूरवीर मुनिराज धन्य है। ऐसे मुनिराज के दर्शन भी महाभाग्य से मिलते हैं। इस समय तो उनके दर्शन दुर्लभ हैं।

अशरीरी सिद्ध पद को साधनेवाले मुनिराज को शरीर को स्वच्छ रखने की, वस्त्र से ढँकने की, औषधि आदि सम्हालने की वृत्ति नहीं होती। यदि शरीर को वस्त्र से ढँकने की वृत्ति भी उठे, तो मुनिदशा नहीं रहती।

कुछ लोग तो कहते हैं कि आप तो अध्यात्मवादी हैं। परद्रव्य से भला-बुरा नहीं मानते। फिर मुनिराज वस्त्र रखें या न रखें? इससे क्या फर्क पडता है?

अरे भाई! तुम्हें अध्यात्मदृष्टि की खबर नहीं है। जिसे अध्यात्म दृष्टि प्रकट हो जाती है और जिसे अध्यात्म की खुमारी होती है, उसे निश्चित अंश में राग-द्वेष भी छूट जाते हैं और जिसको राग-द्वेष नहीं होते, उसे सहज ही वैसा बाह्य प्रसंग भी नहीं होता। अध्यात्म में ऐसा सुमेल सहज होता है। जिसे अन्तर में ब्रम्हचर्य की खुमारी होती है, उसे बाहर में भी स्त्री का प्रसंग नहीं होता। मोक्ष के साधक मुनिराज की अन्तरंग दशा में अध्यात्म की कोई अद्‌भुत खुमारी होती है।

उन्हें चैतन्य के आनन्द और वीतरागता की ऐसी खुमारी होती है कि देह सम्बन्धी राग-द्वेष भी नहीं होते और जहाँ देह के प्रति भी राग नहीं होता, वहाँ वस्त्र धारण करने की क्रिया कैसे होगी? अरे! ठंड पडती हो और कोई भोला जीव भक्ति से चादर ओढा जावे तो भी जैन साधु उसे

उपसर्ग मानते हैं तो फिर स्वयं ही वस्त्र ओढने की बात ही कहाँ रही? अध्यात्म दृष्टि वालों को बराबर विवेक होता है।

वस्त्र परद्रव्य है, उसमें क्या दोष? – ऐसी स्वच्छन्द बुद्धि उन्हें नहीं होती। जैन साधु वस्त्र रखें तो क्या दोष है? – ऐसा कहनेवाले को जैन साधु की पवित्रता की पहचान नहीं है।

जिसप्रकार सज्जन पुरुष रोटी और माँस में अथवा पत्नी और माता में विवेक करते हैं, उसीप्रकार धर्मात्मा को परिग्रह सहित सग्रन्थदशा और परिग्रहरहित निर्ग्रन्थदशा में भेद का विवेक होता है।

हे जीव! यदि तुझसे कदाचित् उत्तम मुनिदशा का पालन न हो सके तो भी उसका स्वरूप तो जैसा है, वैसा समझना, विपरीत नहीं मानना। जो वस्त्र सहित मुनिदशा मानता है, वह जैनधर्म के साधु को नहीं पहचानता, उसे जैनधर्म के गुरुतत्त्व की श्रद्धा नहीं है।

बापू! जैन मुनियों की दशा कोई अलौकिक है। जिनके रोम-रोम में से वीतरागता छलकती है – ऐसे मुनिराज कायर हैं क्या? जो ठंड या गर्मी से बचने के लिए वस्त्र ओढें? वे तो उपसर्ग और परिषह को समभाव से सहज स्वीकार करनेवाले वीर हैं।

मुनिराज निरन्तर ज्ञान-ध्यान-तप में लीन रहते हैं। वे कभी-कभी पिछली रात्रि में थोडी निद्रा लेते हैं, उन्हें विशेष प्रमाद नहीं होता। अहा! जिनका आत्मा चैतन्य की साधना में अत्यन्त जाग्रत है, उन्हें नींद लेना कैसे सुहाएगा? जाग्रत रहकर सिद्धपद को साधनेवाले मुनिराजों से जैनशासन की शोभा है, इसलिये उनका समावेश 'णमो लोए सव्वसाहूणं' में होता है। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन –

प्रत्याख्यानी ही आत्मावलम्बी

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ९९ पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं –

ममत्तिं परिवज्जामि णिम्ममत्तिमुवट्ठिदो।
आलंबणं च मे आदा अवसेसं च वोसरे।।९९।।

(हरिगीत)

छोड़कर ममभाव निर्ममभाव में मैं थिर रहूँ।
बस स्वयं का अवलम्ब ले अवशेष सब मैं परिहरूँ।।

मैं ममत्व को छोड़ता हूँ और निर्ममत्व में स्थित रहता हूँ; आत्मा मेरा आलम्बन है और शेष (सब कुछ) मैं छोड़ता हूँ।

यहाँ, सकल विभाव के संन्यास की (त्याग की) विधि कही है।

सुन्दर कामिनी, कांचन[१] आदि समस्त परद्रव्य-गुण-पर्यायों के प्रति ममकार को मैं छोड़ता हूँ। परमोपेक्षालक्षण से लक्षित निर्ममकारात्मक[२] आत्मा में स्थित रहकर तथा आत्मा का अवलम्बन लेकर, संसृतिरूपी[३] स्त्री के संभोग से उत्पन्न सुख-दु:खादि अनेक विभावरूप परिणति को मैं परिहरता हूँ।

अहो! चिदानन्दस्वरूपी चैतन्य मेरा स्वभाव है, उसमें स्थित होकर अब मैं समस्त ममत्व को छोड़ता हूँ।

---

१. कांचन = सुवर्ण; धन।
२. निर्ममकारात्मक = निर्ममत्वमय; निर्ममत्वस्वरूप। (निर्ममत्व का लक्षण परम उपेक्षा है।)
३. संसृति = संसार।

चैतन्य के अतिरिक्त अन्य समस्त परद्रव्यों तथा परभावों को छोड़कर मैं अपने निर्मम असंयोगीस्वरूप में स्थित रहता हूँ।

देखो! इसका नाम प्रत्याख्यान है; उसमें एक आत्मा ही अपना अवलम्बन है। आत्मा के अवलम्बन से ही प्रत्याख्यान होता है; इसके अलावा देव, गुरु आदि किसी भी निमित्त के अवलम्बन से रागादि का प्रत्याख्यान नहीं होता। पर के अवलम्बन से तो राग होता है और वह राग स्वयं अप्रत्याख्यान है। वह राग आत्मा के सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र में से किसी का भी कारण नहीं है; इसलिए ज्ञानी कहते हैं कि मैं एकमात्र आत्मा का ही अवलम्बन लेता हूँ और समस्त परभाव को छोड़ता हूँ। चैतन्य के अवलम्बन में परभाव छूट जाते हैं, वही प्रत्याख्यान है।

यहाँ सकल विभाव के संन्यास की विधि कही गई है।

चैतन्यस्वरूप आत्मा की भावना छोड़कर जो जीव कंचन और कामिनी की भावना करते हैं, उनकी चैतन्यराम की रमणता लुट जाती है। चैतन्य की भावना करने योग्य है और पर की भावना त्यागने योग्य है - ऐसा ज्ञानी को भान है। हजारों कामिनियों के मध्य में रहनेवाले चक्रवर्ती को अन्तर में चैतन्य का भान था, आसक्ति का राग होने पर भी उसकी भावना नहीं थी, भावना तो एक चैतन्य की ही थी।

मुनिराज को तो ऐसी आसक्ति का राग भी नहीं होता। उनके तो आत्मा में स्थिरता होने पर कंचन-कामिनी के प्रति राग सर्वथा छूट जाता है। गृहस्थ दशा में ज्ञानी को परिग्रह की ममता सर्वथा नहीं छूटती है, तथापि अन्तर में भान होता है कि इन स्त्री-पुरुष अथवा धन-वैभव में मेरा सुख नहीं है और मुझे ही क्या सारे जगत को ही इसमें सुख नहीं है।

जगत में स्त्री और कंचन को मुख्य परिग्रह माना जाता है, अतः यहाँ

उसी की मुख्यता से बात की है। वास्तव में तो सम्मेदशिखर आदि तीर्थ अथवा देव-शास्त्र-गुरु भी परद्रव्य हैं, अतः मैं उनकी भी ममता छोड़ता हूँ; क्योंकि परद्रव्य के प्रति ममता रहने पर राग का प्रत्याख्यान नहीं होता।

चैतन्यस्वरूप मेरा आत्मा परम उपेक्षा लक्षण से लक्षित ऐसा निर्ममस्वरूप है। परद्रव्य के प्रति परम उपेक्षा ही निर्ममत्व का लक्षण है। चैतन्य में ठहरने पर परद्रव्य के प्रति परम उपेक्षा हो जाती है। पर से अत्यन्त उदासीनभाव करके निर्ममत्व स्वरूप आत्मा में ही मैं स्थिर होता हूँ। पर की उपेक्षा करने से चैतन्य आत्मा पहिचान में नहीं आता, क्योंकि उससे राग की उत्पत्ति होती है; अतः निर्मलता नहीं हो पाती।

पर से अत्यन्त उपेक्षित होने को कहा और साथ ही आत्मा का अवलम्बन लेने को कहा - इसप्रकार अस्ति-नास्ति से बात की है। पर का अवलम्बन छोड़कर, मात्र शुद्धात्मा को ही अपना अवलम्बन बनाकर मैं संसाररूपी स्त्री के समागम से उत्पन्न होनेवाली सुख-दुःखादि अनेक विभावरूप परिणति का त्याग करता हूँ - इसका नाम प्रत्याख्यान है।

चैतन्यस्वरूप एक का ही अवलम्बन लेकर सर्व परद्रव्यों की ममता को मैं छोड़ता हूँ। चैतन्य का अवलम्बन लेकर स्थिर होने पर विभावपरिणति उत्पन्न ही नहीं होती, तब 'मैं उसको छोड़ता हूँ' - ऐसा कहा जाता है। आत्मा का अवलम्बन लेने पर वीतरागी परिणति होती है और रागादि की उत्पत्ति ही नहीं होती, इसी का नाम प्रत्याख्यान है।

आचार्यदेव अपनी ही बात करते हैं कि मैं आत्मा का अवलम्बन लेता हूँ और ममत्व का त्याग करता हूँ अर्थात् प्रत्याख्यान करनेवाला स्वयं अपने आत्मा का ही अवलम्बन लेता है। **(क्रमशः)**

समयसार की ४७ शक्तियों पर प्रवचन

प्रकाश शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की ४७ शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

स्वयंप्रकाशमानविशदस्वसंवित्तिमयी प्रकाशशक्तिः। अर्थात् स्वयं प्रकाशमान विशद (स्पष्ट) ऐसी स्वसंवेदनमयी (स्वानुभवमयी) प्रकाशशक्ति है।

यहाँ कहते हैं कि **भगवान आत्मा में ऐसी प्रकाशशक्ति है कि जो स्वयं अर्थात् अपने से ही प्रकाशमान है और स्पष्ट स्वसंवेदनमयी है।** आहाहा...! (स्वयं से स्वयं का वेदन हो) – आत्मा में ऐसी त्रिकाल प्रकाशशक्ति है। इसमें दो महत्त्वपूर्ण बातें हैं कि **आत्मा का प्रकाशस्वभाव स्वयं अपने से ही प्रकाशमान है, उसे पर की कुछ अपेक्षा नहीं है तथा वह स्पष्ट संवेदनमयी है; स्वानुभव में आत्मा प्रत्यक्ष, स्पष्ट जानने में आये – ऐसा आत्मा का प्रकाशस्वभाव है।**

आहाहा...! जैसे दीपक स्वयं अपने से ही प्रकाशमान है, उस दीपक को देखने के लिए अन्य दीपक की आवश्यकता नहीं है – उसीप्रकार **भगवान आत्मा चैतन्यप्रकाश का पुंज प्रभु स्वयं से ही प्रकाशमान है। स्वसंवेदन में स्वयं ही स्वयं को प्रकाशित कर रहा है, उसे प्रकाशित करने के लिए, जानने के लिए राग की, व्यवहार की, निमित्त की अपेक्षा नहीं है।**

आहाहा...! व्यवहार (व्रतादिक का राग) की अथवा निमित्त (देव-शास्त्र आदि) की अपेक्षा बिना ही **स्वसंवेदन में, स्वानुभवमय दशा में आत्मा प्रत्यक्ष ज्ञान में आये – ऐसा आत्मा का स्वरूप है।**

आत्मा में जिसप्रकार ज्ञान, दर्शन आदि हैं; उसीप्रकार एक प्रकाशशक्ति भी है। **स्वसंवेदन में आत्मा का प्रत्यक्ष हो जाना ही उसका कार्य है, सम्यग्दर्शन होने पर मति-श्रुतज्ञान में स्वसंवेदन द्वारा आत्मा प्रत्यक्ष हो जाय, प्रत्यक्ष अनुभव में आये – यह ही इस शक्ति का कार्य है।**

प्रश्न – अरूपी आत्मा जानने में कैसे आता है?

उत्तर – स्वसंवेदन में आत्मा प्रत्यक्ष जानने में आये – ऐसा आत्म-स्वभाव है। भाई! परोक्ष रहना आत्मा का स्वभाव नहीं है; परन्तु आत्मा इन्द्रियों से नहीं जाना जा सकता, वह तो स्वसंवेदन (स्वानुभव) प्रत्यक्ष है, स्वानुभव में ज्ञात होता है।

आहाहा...! **स्वसन्मुख होने पर आत्मा के अतीन्द्रिय आनन्द का जो वेदन हुआ, वह प्रकाशशक्ति का कार्य है।** अतीन्द्रिय आनन्द के साथ होनेवाला जो व्यवहार और बाह्य निमित्त है, उससे यह अतीन्द्रिय आनन्दरूप कार्य नहीं हुआ।

प्रश्न – तो क्या व्यवहार नहीं है, निमित्त नहीं है?

उत्तर – अरे भाई! व्यवहार नहीं है, निमित्त नहीं – ऐसा कौन कहता है? व्यवहार है, बाह्यनिमित्त है, वे जिसप्रकार से हैं, उन्हें उस रूप से भी जो ज्ञान न जाने तो वह ज्ञान मिथ्या है तथा व्यवहार से, निमित्त से आत्मा प्रत्यक्ष होता है अथवा उनसे आत्मा के निर्मल ज्ञान-श्रद्धान प्रगट होते हैं – ऐसा माने तो वह श्रद्धान मिथ्या है।

यहाँ यह बात है कि **व्यवहार अथवा बाह्य निमित्त से आत्मा**

प्रत्यक्ष नहीं होता; बल्कि उनका लक्ष्य छोड़कर स्वसन्मुखता करने पर स्वसंवेदन में ही आत्मा प्रत्यक्ष होता है।

आहाहा...! ऐसा आत्मा का प्रकाश स्वभाव है। यहाँ तो व्यवहार और निमित्त जिसरूप से हैं, उस रूप से उनकी स्थापना की जा रही है; तथा निमित्त एवं व्यवहार के लक्ष्य से, आश्रय से, आत्मानुभवरूप, आत्मा के ज्ञान-श्रद्धान-रमणतारूप धर्म प्रगट होता है - इस मान्यता का निषेध किया जा रहा है; क्योंकि वस्तुस्वरूप ऐसा नहीं है।

अरे रे! अनन्त काल से चौरासी लाख योनियों में रखड़ते-रखड़ते तुझे मुश्किल से यह मनुष्य भव प्राप्त हुआ और उसमें भी जैन कुल में तुम्हारा जन्म हुआ, यह कोई महाभाग्य है। यह सब होने पर भी अन्तर में रुचि लाकर तू इस तत्त्वज्ञान की, भेदज्ञान की हितकारी बात न समझे तो आत्मानुभव कैसे हो?

अरे भाई! तू सुन तो सही; यहाँ सन्त परमात्मा का सन्देश सुनाकर जगत में उसे प्रसिद्ध कर रहे हैं कि तुम्हारे स्वसंवेदन में तुम्हारा आत्मा प्रत्यक्ष हो जाय - ऐसी प्रकाश शक्ति आत्मा में त्रिकाल मौजूद है।

लोगों को तत्त्व की बात सुनने की तो फुरसत ही नहीं है। लोग कमाने, खाने खेलने, विषयभोग में ही अपनी जिन्दगी बिता रहे हैं; इसप्रकार जिन्दगी प्रतिपल निष्फल हो रही है।

प्रभु! तू कौन है और तेरा क्या कार्य है? इसकी तुझे खबर नहीं है। यदि थोड़ा-बहुत धर्म के मार्ग में लगा भी तो तू (अन्तर-अनुभव) का कार्य छोड़कर दया, दान, व्रत, भक्ति, पूजा इत्यादि शुभराग की क्रिया में धर्म मानकर वहाँ ही रुक गया। **भाई! यह तो सब जगपंथ है, यह धर्मपंथ नहीं है, धर्मपंथ तो स्वानुभवमय अलौकिक है।** (क्रमशः)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : ज्ञान में राग नहीं – ऐसा कहा तो जीव को जहाँ तक राग होगा, वहाँ तक वह ज्ञानी नहीं हो सकेगा?

उत्तर : भाई! राग ज्ञानी को अपने ज्ञानभाव से एकमेक नहीं भासता; किन्तु भिन्न ही भासता है अर्थात् ज्ञानी राग में नहीं, किन्तु ज्ञानभाव में ही है – यह बात बराबर समझ में आवे तो पता लगे कि ज्ञानी क्या करता है? राग के समय ज्ञानी राग करता है अथवा ज्ञान करता है – इसका विवेक अज्ञानी को नहीं होता; क्योंकि उसे अपने राग और ज्ञान की भिन्नता का भान नहीं है। सम्यक्त्वी को राग होने पर भी, उसीसमय ज्ञान में ही एकत्वरूप परिणमन होने से और राग में एकरूप परिणमन नहीं होने से वह ज्ञानी ही है।

प्रश्न : वर्तमान में राग सहित होने पर राग रहित स्वभाव की श्रद्धा कैसे हो सकती है ? जब तक हमारी पर्याय में राग विद्यमान है, तब तक राग रहित स्वभाव की श्रद्धा कैसे हो ? पहले राग छूट जाये, तब राग रहित स्वभाव की श्रद्धा हो।

उत्तर : ऐसे जीव राग को ही अपना स्वरूप मानकर सम्यक् श्रद्धा नहीं करते और पर्यायदृष्टि से अपने राग रहित स्वरूप का अनुभव नहीं करते। जिस समय क्षणिक पर्याय में राग है, उसी समय राग रहित त्रिकालीस्वभाव भी साथ में पड़ा है, इसलिये पर्यायदृष्टि को छोड़कर स्वभाव की प्रतीति करने पर उस प्रतीति के बल पर राग अल्पकाल में टल जायेगा। उस प्रतीति के बिना तो राग टलनेवाला है नहीं। 'राग टले तो श्रद्धा करें' अर्थात् 'पर्याय

सुधरे तो द्रव्य को मानें' - ऐसी मान्यता वाले जीव पर्यायदृष्टि हैं - पर्यायमूढ हैं। उन्हें स्वभावदृष्टि नहीं है और वे मोक्षमार्ग के क्रम को जानते नहीं हैं; क्योंकि वे सम्यक् श्रद्धा से पहले सम्यक्चारित्र करना चाहते हैं। पर्यायदृष्टि से अपने को रागस्वभावी मान लेगा तो राग दूर नहीं हो सकेगा।

सम्यग्दृष्टि जीव अभिप्राय-अपेक्षा से वीतराग है और उसी अभिप्रायपूर्वक के विशेष परिणमन से उसे चारित्र-अपेक्षा भी वीतरागता प्रकट हो जाती है। पहले अभिप्राय-अपेक्षा से वीतरागता प्रकट हुये बिना किसी भी जीव को चारित्र-अपेक्षा से वीतरागता प्रकट नहीं हो सकती। जब तक राग रहेगा, तब तक श्रद्धा सम्यक् नहीं हो सकती - ऐसा जो मानता है, वह श्रद्धा गुण और चारित्र गुण के कार्य को भिन्न न मानकर एक ही मानता है; उसको न तो श्रद्धा का स्वीकार है और न ही चारित्र का। ऐसी स्थिति में उसे सचमुच आत्मा का ही स्वीकार नहीं है।

प्रश्न : समयसार संवराधिकार की प्रारंभिक गाथा 181 की टीका में कहा है कि वास्तव में एक वस्तु दूसरी वस्तु की नहीं है। वहाँ यह भी कथन है कि जीव और राग के प्रदेश भिन्न-भिन्न हैं। कृपया स्पष्ट करें?

उत्तर : वास्तव में एक वस्तु दूसरी वस्तु की नहीं है, इसलिये दोनों के प्रदेश भिन्न हैं। आत्मवस्तु से शरीरादि परद्रव्य तो भिन्न हैं ही; किन्तु यहाँ तो मिथ्यात्व व राग-द्वेष के जो परिणाम हैं, वे भी निर्मलानन्द प्रभु - ऐसे आत्मा से भिन्नस्वरूप हैं। अत: पुण्य-पापभाव आत्मा के भाव से भिन्न हैं और भाव से भिन्न होने के कारण उनके प्रदेश भी भिन्न हैं। असंख्यप्रदेशी आत्मा से आस्रव के प्रदेश भिन्न हैं। ये हैं तो जीव के प्रदेश में ही; परन्तु निर्मलानन्द प्रभु असंख्यप्रदेशी ध्रुव से आस्रवभाव के प्रदेश भिन्न हैं। आत्मा और आस्रव में भाव से भिन्नता है, इसलिये उनके प्रदेश को भिन्न कहा और आत्मा के आश्रय से प्रकट हुई निर्मल पर्याय भी आस्रव वस्तु से भिन्न कही गई है। भाव से भिन्न होने के कारण उनके प्रदेश को भी भिन्न कहकर वस्तु ही भिन्न है - ऐसा कथन आचार्य ने किया है। **(क्रमश:)**

समाचार दर्शन -

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

सिंगोली-नीमच (म.प्र.) : राजस्थान के प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र बिजोलिया पारसनाथ के समीप सिंगोली नगर की वसुंधरा पर आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के मंगल प्रभावना योग में स्थापित श्री १००८ आदिनाथ दिग. जैन मंदिर, श्री कुन्दकुन्द कहान धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट एवं दि. जैन मुमुक्षु मण्डल सिंगोली के तत्त्वावधान में दिनांक ०३ से ०८ दिसम्बर २१ तक श्री १००८ नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया।

प्रतिष्ठा महोत्सव में आध्यात्मिक सत्पुरुष कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों एवं अन्तर्राष्ट्रिय युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के पंचकल्याणक सम्बन्धी प्रासंगिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित रजनीभाईजी दोषी हिम्मतनगर, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजोलिया एवं पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड के मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला।

सम्पूर्ण पंचकल्याणक बाल ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के प्रतिष्ठाचार्यत्व एवं पण्डित रजनीभाईजी दोषी के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। सह-प्रतिष्ठाचार्य पं. सुबोधजी शास्त्री, डॉ. मनोजजी जबलपुर, पं.नन्हे भैया सागर, पं.सुकुमालजी झांझरी एवं सह-निर्देशक श्री अशोककुमारजी लुहाड़िया व श्री देवेन्द्रजी जैन बिजोलिया थे।

इस भवतापहारी प्रतिष्ठा महोत्सव में भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमान सूरजमलजी-विमलाबाई ने प्राप्त किया। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्रीमान निश्चलजी-प्रीतिजी बघेरवाल एवं कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री गुलाबचंदजी-विमलाजी हरसोरा रहे।

इस अवसर पर प्रसंगानुरूप सम्पन्न विविध कार्यक्रम आकर्षण का केन्द्रबिन्दु रहें, जिसमें नाटिका-सुदर्शन सेठ का वैराग्य, देवों-मानवों की चर्चा, समवशरण रचना व दिव्यध्वनि खिरना तथा निर्वाण महोत्सव का दृश्य विशेष आकर्षक थे।

इस प्रसंग पर आयोजित विधि-विधान पण्डित संजयजी कोटा, पण्डित मनीषजी पिडावा, पण्डित अशोकजी उज्जैन एवं पण्डित सुबोधजी ग्वालियर ने सम्पन्न कराये।

सहजता दिवस कार्यक्रम सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक २१ नवम्बर २०२१ को **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के जन्म दिवस** के अवसर पर उनके उपकारों का स्मरण करते हुए **सहजता दिवस** के रूप में एक समारोह का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का मंगल सान्निध्य प्राप्त हुआ।

समारोह की अध्यक्षता महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान अशोकजी बड़जात्या ने की। आमंत्रित अतिथियों में श्रीमान अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्रीमान अशोकजी पाटनी सिंगापुर, अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ न्यासी श्रीमान एन. के. जैन खीचा जयपुर, नगर निगम के उपमहापौर पुनीतजी करणावत, डॉ. अखिलजी बंसल, पण्डित महावीरजी पाटील, श्रीमती कमलाजी भारिल्ल, श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल आदि उपस्थित रहे। संचालन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, उदयपुर एवं मंगलाचरण पण्डित दिव्यांश जैन ने किया।

सर्वप्रथम पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने सहजता दिवस का परिचय देते हुए अपने भावों को व्यक्त किया। साथ ही श्री अशोकजी बड़जात्या, श्री अशोकजी पाटनी, डॉ. वीरसागरजी, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं श्रीमती कमलाजी भारिल्ल ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

वीडियो सन्देश – इस अवसर पर श्री अनंतरायजी मुम्बई, श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, श्री पवनजी जैन मंगलायतन, श्री अजीतप्रसादजी दिल्ली, श्री प्रेमचंदजी बजाज, श्री महिपालजी ज्ञायक, श्री अतुलभाई खारा, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित बाहुबलीजी भोसगे एवं जम्बूकुमारजी के वीडियो संदेश प्रसारित किए गए।

विभिन्न प्रस्तुतियाँ – वीडियो के माध्यम से 'सहज पुरुष की सहज जीवन यात्रा' का एक विहंगावलोकन किया गया। बड़े दादा व छोटे दादा के मिलन को दर्शाती हुई वीडियो प्रस्तुत की गई एवं पूर्विका जैन पुत्री श्रीमती परिणतिजी शास्त्री विदिशा द्वारा 'शुद्धातम है मेरा नाम' इस गीत को प्रस्तुत किया गया। महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा ही बड़े दादा की महानतम कृति 'विदाई की वेला' के सम्पूर्ण सार को अभिव्यक्त करने वाली एक सुंदर लघु नाटिका भी प्रस्तुत की गई।

सहज विचार संगोष्ठी – महाविद्यालय स्नातकों ने भी दादा के व्यक्तित्व को विषयों में ढालकर प्रस्तुत किया, 'जिसमें संघर्षों के घर्षण से उत्पन्न भारिल्ल' – समर्थ जैन हरदा, 'रतन रचनाओं का प्रारूप एवं विषय' – चेतन जैन गुढ़ाचंद्रजी, 'पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के आचार-विचार में सहजता'– संदेश जैन दिल्ली, 'रत्न स्वभाव के अनुरूप शैली'– नमन जैन हटा, 'रत्नों में अनूठी रत्नचंद शैली'– अरविंद जैन खड़ैरी, 'रतन कलम का कमाल'– स्वस्ति सेठी ने अपने विचार व्यक्त किये।

काव्यांजलि – कविताओं के माध्यम से अमन जैन खनियांधाना ने 'सहज पुरुष की आदर्श गाथा', अभिषेक जैन देवराहा ने 'दादा द्वय का अटूट वात्सल्य' एवं समकित जैन ईसागढ़ ने 'रत्न साहित्य में अनमोल रतन' विषय पर कविताएँ सुनाई।

पुरस्कार घोषणा – साथ ही **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल पुरस्कार २०२१** विभिन्न संस्थाओं द्वारा एवं पण्डित रतनचन्द भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पुरस्कार स्वरूप नगद राशि **पण्डित समकित जैन शास्त्री ईसागढ़, पण्डित विकास जैन शास्त्री बानपुर, प्रो. मयंककुमार जैन अशोकनगर, पण्डित समकित जैन शास्त्री खनियांधाना** इन चार उदीयमान व्यक्तित्वों को वरिष्ठ महानुभावों द्वारा सम्मानित कर प्रदान किया गया। आभार पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

आचार्य कुन्दकुन्द व गुरुदेवश्री को स्मरण

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक २८ नवम्बर २०२१ को कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्द पदारोहण दिवस व आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी स्मृति दिवस के अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

जिसकी अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने की।

इस अवसर पर संयम जैन, दिल्ली ने 'कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्द' व सुष्मित जैन, सेमारी ने 'आचार्य कुन्दकुन्द की वाणी के प्रचार-प्रसार में कानजीस्वामी का योगदान' विषय पर विचार व्यक्त किए। कविता के माध्यम से समकित जैन, ईसागढ़ ने 'गुरूदेवश्री कानजीस्वामी की जीवन यात्रा' व अमन जैन, खनियांधाना ने छोटे दादा डॉ. भारिल्ल द्वारा गुरूदेवश्री के स्मरण में लिखी गई कविता का वाचन किया। अन्त में आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

अष्टान्हिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

१) देवलाली (महा.) : पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक ११ से १९ नवम्बर तक अष्टान्हिका महापर्व का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री पंचमेरु नंदीश्वर मण्डल विधान, गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन, वाल ब्र. हेमचंदजी देवलाली एवं पण्डित सुरेशजी शास्त्री गुना के प्रवचनों का लाभ मिला। समस्त कार्यक्रम पण्डित समकितजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित उर्विषजी शास्त्री देवलाली के सहयोग से सम्पन्न हुए।

२) उदयपुर (राज.) : यहाँ अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर श्री समयसार महामण्डल विधान का आयोजन बाल ब्र. नन्हे भैया सागर के विधानाचार्यत्व में किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन बाल ब्र. नन्हेभैया के प्रवचनों का एवं स्थानीय विद्वानों में पं. राजकुमारजी, डॉ. महावीरप्रसादजी, पं. खेमचंदजी, पं. गजेन्द्रजी के प्रवचनों का लाभ मिला। संचालन पं. तपिशजी शास्त्री ने किया।

३) कुकमा (भुज) : यहाँ श्रीमद् राजचंद्र साधना केन्द्र में अष्टान्हिका पर्व एवं श्रीमद् राजचंद्र जन्मजयंती के अवसर पर आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान सत्संग व १७० तीर्थंकर विधान दि. १६ से १९ नवम्बर तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री गांगभाई मोताजी का मंगल सान्निध्य एवं पण्डित संजयजी शास्त्री, कोटा का समागम प्राप्त हुआ। दैनिक कार्यक्रमों में विधान, समाधिमरण परिचर्चा, जिनेन्द्र भक्ति एवं पण्डित संजयजी शास्त्री, कोटा द्वारा वैराग्य से ओतप्रोत कथाओं लाभ मिला। १९ नबम्वर को श्रीमद्राजचंद्र जयंती के अवसर पर विशेष उत्सव मनाया गया।

४) नागपुर : यहाँ श्री महावीर दिग. जैन मंदिर में डॉ. हीराचंदजी गडेकर परिवार हिवरखेड द्वारा श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के प्रवचनों के पूर्व पण्डित विजयकुमारजी राऊत रिठद, पण्डित विनितजी शास्त्री नागपुर, ब्र. अजयजी शिरपुर तथा विदुषी हर्षाजी वेखंडे के मार्मिक प्रवचन हुए। विधि-विधान के कार्य ब्र. आदेशजी कारंजा द्वारा सम्पन्न कराए गए।

५) काटोल : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट द्वारा अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री पंचमेरु नंदीश्वर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पं. नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल द्वारा प्रात: धवला पुस्तक-१ तथा रात्रि में नाटक समयसार पर प्रवचन हुए। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित चैतन्यजी शास्त्री द्वारा सम्पन्न हुए।

६) विश्वास नगर (दिल्ली) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. दीपकजी शास्त्री वैद्यरत्न द्वारा प्रात: समयसार की विशिष्ट गाथाओं, दोपहर में स्वास्थ्य व चरणानुयोग एवं रात्रि में द्रव्यसंग्रह के आधार से प्रथमानुयोग द्वारा जैनधर्म के मुख्य सिद्धान्त को समझाया गया। प्रतिदिन पंच परमागम विधान का आयोजन भी हुआ।

ध्यान संगोष्ठी सानन्द सम्पन्न

कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के अवसर पर पण्डित अरुणकुमारजी मोदी परिवार, सागर के विशेष सहयोग एवं पण्डित राकेशजी शास्त्री, नागपुर के निर्देशन में १७ से २१ नवम्बर २१ तक **ध्यान विषय** पर संगोष्ठी आयोजित हुई।

पाँच सत्रों में आयोजित संगोष्ठी में समाज के तत्त्वाभ्यासी विद्वानों द्वारा ध्यान के स्वरूप का विभिन्न दृष्टिकोणों से अवलोकन किया गया। जिनकी अध्यक्षता ब्र. हेमचंदजी हेम देवलाली, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित धर्मेंद्रजी शास्त्री कोटा एवं पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा ने की।

२१ नवम्बर को आयोजित समापन समारोह में मुख्य रूप से तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का मंगल सान्निध्य एवं प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ। सभा में पण्डित प्रदीपजी झांझरी, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट, श्री अनंतराय ए. सेठ मुंबई, श्री बसंतभाई दोषी मुंबई, श्री अजीतप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री अजीतजी जैन बड़ौदा, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर, डॉ. संजयजी शास्त्री दौसा एवं पण्डित संजयजी शास्त्री जयपुर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. राकेशजी शास्त्री, नागपुर एवं मंगलाचरण कु. श्वेतल सुनीलकुमार जैन, राजकोट ने किया।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई के तत्त्वावधान में

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

सम्मेदशिखरजी : यहाँ कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के अवसर पर दि.२२ से २९ नवम्बर २१ तक श्री कुन्दकुन्द-कहाननगर में शिक्षण शिविर, श्री समयसार महामण्डल विधान एवं नौवें वार्षिक महोत्सव का आयोजन किया गया।

ध्वजारोहणकर्ता श्री सुरेशकुमार अशोककुमार सुशीलकुमारजी बजाज परिवार कोलकाता, शिविर उद्घाटनकर्ता श्री देवेन्द्रकुमारजी चंगाणी मुंबई, विधान उद्घाटनकर्ता श्री राहुल नवीनभाई के. मेहता मुंबई रहे।

सभाध्यक्ष श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ़ के अतिरिक्त श्री बसंतभाई दोषी, श्री महीपालजी ज्ञायक, श्री राजकुमारजी अजमेरा, श्री पदमजी पहाड़िया, श्री भरतभाई टिंबडिया, श्री हर्षवर्धनजी जैन, श्री वीनूभाई शाह आदि उपस्थित रहे। स्वागत भाषण श्री आलोकजी जैन कानपुर एवं आभार श्री अशोकजी जैन जबलपुर ने किया।

इस अवसर पर प्रतिदिन श्री समयसार महामण्डल विधान, गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, बाल ब्र. जतीशचंदजी सनावद, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित रजनीभाईजी हिम्मतनगर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ एवं पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड के व्याख्यानों का लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं अशोकजी जैन उज्जैन ने सम्पन्न कराये।

इस अवसर पर साहित्य लेखन के क्षेत्र में **पण्डित अमनजी शास्त्री लोनी,** तत्त्वप्रचारक के रूप में **पण्डित अनेकांतजी शास्त्री बेलगांव,** जिनधर्म प्रभावक के रूप में **पण्डित मिथुनजी शास्त्री बेलगांव** एवं उदीयमान युवा प्रतिभाशाली विद्वान के रूप में **पण्डित श्री ऋषभजी शास्त्री दिल्ली** को 25-25000 की राशि, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया।

इन पुरस्कारों के अनुमोदक स्व. श्री उम्मेदमलजी स्व. श्रीमती तेजप्रभाजी बड़जात्या की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री कमलजी सुपौत्र श्री साकेतजी बड़जात्या परिवार मुम्बई थे। इस पहल की सभी साधर्मियों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

मुमुक्षु समाज के आधार स्तम्भ....

श्री पवनजी जैन अलीगढ़ नहीं रहे....

अलीगढ़ शहर की प्रख्यात शख्सियत, पूज्य गुरुदेवश्री के अनन्य भक्त, मंगलायतन व चिदायतन के स्वप्नदृष्टा, कर्तव्यनिष्ठ, समाजसेवी, ऊर्जास्रोत, कुशल प्रबंधक, दूरदृष्टा, जिनशासन के प्रभावक व आराधक, आदर्श कर्मयोगी, वात्सल्य, गंभीरता आदि अनेक गुणों से युक्त **श्री पवनजी जैन** का **गुरुवार, २ दिसम्बर** को ७० वर्ष की आयु में शांतभाव से देहावसान हो गया।

इस अपूरणीय क्षति ने सभी को झकझोर कर रख दिया है। उनका अंतिम संस्कार विलम्ब न करते हुए गुरुवार की दोपहर में ही कर दिया गया।

१) आपकी स्मृति में **तीर्थधाम मंगलायतन** द्वारा दि. ०५ दिसम्बर को भव्य श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न हुई, जिसके अंतर्गत देश-विदेश के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने सभा में उपस्थित होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

सर्वप्रथम पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री पंडित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल के हृदयोद्गार के उपरांत श्री अजितप्रसादजी दिल्ली, पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, श्री अजितजी बड़ोदरा, श्री अतुलजी गुप्ता, श्री अजयजी राजकोट, पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा, श्री महेन्द्रजी गुप्ता, पण्डित अनुभवजी करेली, पण्डित अगमजी उदयपुर, श्री ज्ञानेंद्रजी अलीगढ़, श्रीमति बीनाजी एवं उनके सुपुत्र श्री स्वप्निलजी जैन ने अपने उद्गार व्यक्त किए। इस प्रसंग पर सभा में श्री हितेनभाई सेठ मुंबई, श्री अक्षयभाई दोषी, पंडित प्रकाशजी मैनपुरी, प्रो. सुदीपजी जैन दिल्ली, पंडित अशोकजी लुहाड़िया, डॉ. योगेशजी अलीगंज उपस्थित रहे।

ज्ञातव्य है कि अपने देह वियोग के पूर्व ही आपने लगभग ४३ संस्थाओं में २१ लाख रुपये की राशि दान देने की भावना व्यक्त कर दी थी, जिसके अंतर्गत पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को प्रचार-प्रसार हेतु ७५००० रुपये की राशि प्रदान की गई।

२) इसी क्रम में **पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर में दिनांक ०४ दिसम्बर २०२१** को प्रात: शोक सभा का आयोजन किया गया। वैराग्य भावना के पाठ उपरांत श्री पवनजी जैन के वीडियो प्रवचन का प्रसारण किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के अतिरिक्त पंडित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील एवं पंडित अरुणजी शास्त्री बण्ड ने श्री पवनजी के जीवन प्रसंगों का स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि समर्पित की। मंगलायतन विद्यालय के पूर्व छात्र समकित जैन ईसागढ़ एवं संदेश जैन दिल्ली ने भी अपने विचार व्यक्त किए। साथ ही डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने भी अपने ऑनलाइन प्रवचनोपरांत हजारों श्रोताओं के मध्य श्रद्धासुमन अर्पित किए।

३) **श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट नागपुर** द्वारा **दिनांक ०८ दिसंबर २१** को श्री जयकुमारजी देवड़िया की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। जिसमें डॉ. राकेशजी शास्त्री, पंडित विपिनजी शास्त्री, विदुषी प्रतीतिजी मोदी, श्री नरेशजी जैन ने श्री पवनजी द्वारा किए गये अपूर्व कार्यों का स्मरण करते हुए उनके प्रति श्रद्धासुमन समर्पित किए। तथा बताया कि उनका तत्त्वज्ञान के प्रति अद्भुत और अलौकिक समर्पण सदैव हमें प्रेरणा देता रहेगा।

४) **मुमुक्षु ऑफ नॉर्थ अमेरिका** द्वारा **दिनांक ०४ एवं ०५ दिसम्बर २१** को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा में अमेरिका, कनाड़ा, अफ्रीका, सिंगापुर, लन्दन आदि स्थानों से अनेक साधर्मियों ने अपने उद्गार व्यक्त किए। सभा का संचालन श्री किरीटभाई गोसलिया ने किया। सभा का संयोजन एवं व्यवस्थाएँ श्री रजनीभाई, श्री प्रग्नेशभाई एवं भानूबेन द्वारा सम्भाली गई।

आपके वियोग से मुमुक्षु समाज को एक अपूरणीय क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति संभव नहीं है। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय, वीतराग-विज्ञान एवं जैन पथप्रदर्शक परिवार आपके प्रति भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित करते हुए आपके शीघ्र भव-विराम की भावना भाता है। **– सह-संपादक**

१३ वाँ वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न

चैतन्यधाम (गुज.) : यहाँ ५ दिसम्बर, २१ को १३ वाँ वार्षिकोत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्री प्रवचनसार परमागम विधान, गुरुदेवश्री के सी.डी.प्रवचन एवं पण्डित शैलेशभाई शाह तलोद के प्रवचनोपरान्त वर्तमान चौबीसी की ध्वजा-शिखर शुद्धि, मंदिर की पंच ध्वजा-शिखर शुद्धि एवं ध्वजा परिवर्तन का कार्यक्रम अनेक महानुभावों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन पण्डित सचिन शास्त्री एवं आभार श्री प्रतीकभाई चंद्रकांत शाह ने किया।

वैराग्य समाचार

१) सरदारशहर निवासी **श्री अभयकरणजी सेठिया** का दि. ०९ नवम्बर,२१ को शान्त परिणामों सहित देहावसान हो गया। वे दृढ धर्मानुरागी थे। सांसारिक रुचि छोड निरन्तर जिनवाणी श्रवण-मनन में निरत रहते थे। कुछ महिनों से शारीरिक अस्वस्थता होने पर भी 'मैं रोगों से भिन्न हूँ' इसप्रकार की भेदविज्ञान धारा उन्हें निरन्तर वर्तती थी। आपकी स्मृति में पं. टोडरमल स्मारक सर्वोदय ट्रस्ट को एक विद्यार्थी के शिक्षण हेतु ३०,००० रुपये दानस्वरूप प्राप्त हुए; एतदर्थ धन्यवाद!

२) मैनपुरी निवासी **श्रीमती शीलाजी जलोटा** धर्मपत्नी श्री गणेशप्रसादजी जलोटा का निधन अत्यन्त शान्त परिणामों सहित हुआ। आपकी स्मृति में आपके सुपुत्र श्री दीपकजी जलोटा द्वारा ५१००/- रुपये प्राप्त हुए; एतदर्थ धन्यवाद।

३) गोरमी निवासी **श्रीमती सुनीताजी** का दिनांक ०७ दिसम्बर, २०२१ को आकस्मिक देह परिवर्तन हो गया है। ज्ञातव्य है कि आप श्री टोडरमल दि. जैन सि.महा.जयपुर के स्नातक विद्वान चेतन शास्त्री व वैभव शास्त्री की माताजी हैं।

४) वर्धा निवासी **श्रीमती विजयाबाई** वर्धमानजी क्षीरसागर का दिनांक ११ नवम्बर, २०२१ को शांत परिणामों से देहपरिवर्तन हुआ। आप अत्यन्त सरल परिणामी एवं स्वाध्यायी महिला थीं। अन्तिम समय में आयोजित सभी ऑनलाइन शिविर, प्रवचन एवं स्वाध्यायमाला का आपने खूब लाभ लिया।

दिवंगत सभी आत्मायें शीघ्र परमपद को प्राप्त करें – यही भावना है।

श्री कुंदकुंद कहान दिगंबर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट इंदौर द्वारा आयोजित

श्री इंदध्वज महामंडल विधान

दिनांक 26 दिसंबर 2021 से दिनांक 1 जनवरी 2022 तक

आमंत्रण पत्रिका

दैनिक कार्यक्रम

प्रात:

7:15 बजे से - अभिषेक एवं नित्यनियम पूजन
8:00 बजे से - सी.डी. प्रवचन
आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी
8:30 बजे से - श्री इंद्रध्वज महामंडल विधान
(विधान का विशेष माहात्मय
डॉ. संजीवजी गोधा द्वारा)

सांय

6:30 बजे से - जिनेन्द्र भक्ति
7:15 बजे से - प्रथम प्रवचन विभिन्न विद्वानों द्वारा
8:00 बजे से - द्वितीय प्रवचन डॉ. संजीवजी गोधा द्वारा
8:45 बजे से - तृतीय प्रवचन डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा

विधान आमंत्रण कर्ता

1. श्रीमति कुसुम महेंद्र कुमार एवं सुपुत्र राहुल- विनित एवं समस्त गंगवाल परिवार, जयपुर
2. विजय भाई दादर, मुंबई
3. नरेंद्रजी कल्पनाजी बड़जात्या, जयपुर
4. श्रीमान सुशीलजी बजाज, कोलकाता

विधानाचार्य : बाल ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री, खनियांधाना
विधान विशेषज्ञ : डॉ संजीवकुमार गोधा, जयपुर

सह विधानाचार्य : डॉ. अंकितजी शास्त्री, लूणदा
डॉ. विवेकजी शास्त्री, ढाईद्वीप इंदौर
पं. अशोकजी शास्त्री, ढाईद्वीप इंदौर

निर्देशक : पं. विपिनजी शास्त्री, मुंबई
श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर
सहानिर्देशक : पं. पीयूषजी शास्त्री, जयपुर

Watch on YouTube / Dhaidweep Jinayatan

विशेष कार्यक्रम : 31 दिसंबर नूतन वर्षाभिनंदन जिनेंद्र चरणों में सादर वंदन

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2021-23*

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन के बढ़ते चरण...

प्रकाशन तिथि : 21 दिसम्बर 2021

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.

द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**